॥ श्री विंधेश्वरी चालीसा ॥

Chalisamantras.com

।। दोहा ।।

नमो नमो विंधेश्वरी,
नमो नमो जगदम्ब ।
सन्तजनों के काज में,
करती नहीं विलम्ब ।

।। श्री विंधेश्वरी चालीसा ।।

जय जय जय विन्ध्याचल रानी,
आदिशक्ति जगविदित भवानी ।
सिंहवाहिनी जै जगमाता,
जय जय जय त्रिभुवन सुखदाता ।

कष्ट निवारण जय जगदेवी,
जय जय सन्त असुर सुर सेवी ।
महिमा अमित अपार तुम्हारी,
शेष सहस मुख वर्णत हारी ।

दीनन को दु:ख हरत भवानी,
नहिं देखो तुम सम कोउ दानी ।
सब कर मनसा पुरवत माता,
महिमा अमित जगत विख्याता ।

जो जन ध्यान तुम्हारो लावै,
सो तुरतहि वांछित फल पावै ।
तुम्हीं वैष्णवी तुम्हीं रुद्रानी,
तुम्हीं शारदा अरु ब्रह्मानी ।

Chalisamantras.com

रमा राधिका श्यामा काली,
तुम्हीं मातु सन्तन प्रतिपाली ।
उमा माध्वी चण्डी ज्वाला,
वेगि मोहि पर होहु दयाला ।

तुम्हीं हिंगलाज महारानी,
तुम्हीं शीतला अरु विज्ञानी ।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता,
तुम्हीं लक्ष्मी जग सुख दाता ।

तुम्हीं जाह्नवी अरु रुद्रानी,
हे मावती अम्ब निर्वानी ।
अष्टभुजी वाराहिनि देवा,
करत विष्णु शिव जाकर सेवा ।

चौंसट्ठी देवी कल्यानी,
गौरि मंगला सब गुनखानी ।
पाटन मुम्बादन्त कुमारी,
भाद्रिकालि सुनि विनय हमारी ।

बज्रधारिणी शोक नाशिनी,
आयु रक्षिनी विन्ध्यवासिनी ।
जया और विजया वैताली,
मातु सुगन्धा अरु विकराली ।

नाम अनन्त तुम्हारि भवानी,
वरनै किमि मानुष अज्ञानी ।
जापर कृपा मातु तब होई,
जो वह करै चाहे मन जोई ।

Chalisamantras.com

कृपा करहु मोपर महारानी,
सिद्ध करहु अम्बे मम बानी ।
जो नर धरै मातु कर ध्याना,
ताकर सदा होय कल्याना ।

विपति ताहि सपनेहु नाहिं आवै,
जो देवीकर जाप करावै ।
जो नर कहँ ऋण होय अपारा,
सो नर पाठ करै शत बारा ।

निश्चय ऋण मोचन होई जाई,
जो नर पाठ करै चित लाई ।
अस्तुति जो नर पढ़े पढ़अवे,
या जग में सो बहु सुख पावे ।

जाको व्याधि सतावे भाई,
जाप करत सब दूर पराई ।
जो नर अति बन्दी महँ होई,
बार हजार पाठ करि सोई ।

निश्चय बन्दी ते छुट जाई,
सत्य वचन मम मानहु भाई ।
जापर जो कछु संकट होई,
निश्चय देविहिं सुमिरै सोई ।

जा कहँ पुत्र होय नहिं भाई,
सो नर या विधि करे उपाई ।
पाँच वर्ष जो पाठ करावै,
नौरातन महँ विप्र जिमावै ।

Chalisamantras.com

निश्चय होहिं प्रसन्न भवानी,
पुत्र देहिं ता कहँ गुणखानी ।
ध्वजा नारियल आन चढ़ावै,
विधि समेत पूजन करवावै ।

नित प्रति पाठ करै मन लाई,
प्रेम सहित नहिं आन उपाई ।
यह श्री विन्ध्याचल चालीसा,
रंक पढ़त होवे अवनीसा ।

यह जन अचरज मानहु भाई,
कृपा दृश्टि जापर होइ जाई ।
जय जय जय जग मातु भवानी,
कृपा करहु मोहि निज जन जानी ।

।। इति श्री विंधेश्वरी चालीसा समाप्त ।।

Chalisamantras.com

Chalisamantras.com